विचार बिन्दु

सारा जगत स्वतंत्रता के लिए लालायित रहता है फिर भी प्रत्येक जीव अपने बंधनो को प्यार करता है। –श्री अरविंद

चुनना आपको है!

भारत में ख़रीद–फरोख़्त की दुनिया बहुत तेज़ी से बदल रही है। वैसे बदलाव तो सारी ही दुनिया में आ रहे हैं लेकिन क्योंकि हम अपने देश में आ रहे बदलावों से ज़्यादा प्रभावित होते हैं, यहां हम उसी की चर्चा कर रहे हैं। बहुत पुरानी बात नहीं है जब हमारे पास खरीद के ठिकाने बहुत कम थे। गांव के मोदी जी की दुकान, गली के नुक्कड़ का दुकानदार, और ज़्यादा से ज़्यादा हुआ तो हर शहर का एक मुख्य बाज़ार। मिलने वाला सामान भी सीमित हुआ करता था। ग्राहक के पास बहुत कम विकल्प होते थे। किसी को कभी देश से बाहर जाने का मौका मिलता था तो वह वहां के लकदक बाज़ारों और मिलने वाले वैविध्यपूर्ण सामानों को देखकर चौंधिया जाता था। लेकिन पिछले कुछ समय में ये स्थितियां पूरी तरह बदल गई हैं। अब भारत में करीब–करीब वे सारी वस्तुएं मिलती हैं जो दुनिया के अन्य विकसित देशों के नागरिकों को सुलभ हैं। बाज़ारों के रंग रूप भी बहुत बदल चुके हैं। दुकानों की स्पर्धा अब डिपार्टमेण्टल स्टोर्स, मेगा स्टोर्स, और मॉल्स से हो रही है। इन सबका फैलाव महानगरों से नगरों, नगरों से कस्बों और अब तो कस्बों से गांव तक हो गया है।

आज खरीददार के पास विकल्पों की बहुतायत है। और विकल्पों की यह बहुलता केवल उत्पादों और ब्राण्ड्स के मामले में ही नहीं है। अब उसके पास यह विकल्प बाहुल्य भी है कि वह खरीददारी कहां से और कैसे करे। पहले जहां उसके पास केवल अपने मुहल्ले की दुकान से खरीददारी का विकल्प था, अब अगर वह चाहे तो दुकान को छोड़कर मॉल में जा सकता है और अगर कहीं न जाना चाहे तो किसी ई कॉमर्स साइट से घर बैठे भी अपनी इच्छित वस्तु पा सकता है। मॉल में जाने का अतिरिक्त लाभ यह होता है कि उसे चकाचक माहौल मिलता है, चुस्त सेल्समैन/वुमन की परिष्कृत सेवाएं मिलती हैं, बहुत सारे उत्पादों को देखकर उनमें से चुनने का अवसर मिलता है, एक ही छत के नीचे सारी ख़रीददारी करने की सुविधा मिलती है, और खरीददारी के साथ–साथ मनोरंजन और आमोद–प्रमोद के अवसर भी मिलते हैं। आम तौर पर मॉल्स में फूड कोर्ट भी होते हैं, बहुत बार सिनेमा हॉल भी होते हैं तो खरीददादारी के साथ–साथ आउटिंग का आनंद भी मिल जाता है।

अब इन दोनों को बहुत कड़ी टक्कर मिल रही है ई कॉमर्स साइट्स से। आजकल हमारे शहरों में वाहनों की भीड़–भाड़ और बहुत तेज़ी से बढ़ते जा रहे ट्रैफिक जामों की वजह से लोगों का घर से निकलना सुखद नहीं रह गया है। निकल गए और गंतव्य तक पहुंच भी गए तो पार्किंग की समस्या। और अगर वह भी हल हो गई तो दुकानदार का रूखा बर्ताव, खरीददारी के लिए सीमित विकल्प, मॉल में चले गए तो तुलनात्मक रूप से महंगा सामान खरीदने की चुभन। आखिर मॉल में जिसने दुकान लगाई है वह सारे खर्चे तो अपने ग्राहक से ही वसूलेगा। ऐसे में ठंडी हवा के झोंके की तरह आई ई कॉमर्स साइट्स। कहीं जाने की ज़रूरत नहीं। घर बैठे ऑर्डर दें और जल्दी से जल्दी मनचाहा सामान प्राप्त करें। अगर पसंद न आए तो एक निश्चित अवधि में वापस कर दें या बदलवा लें। अगर एक साथ बड़ी राशि खर्च न करना चाहें तो इंस्टॉलमेंट की सुविधा ले लें और सबसे बड़ी बात, बाज़ार की दरों से कम दरों पर सामान खरीद लें। भारतीय ठााहक तुलनात्मक रूप से कम दरों को बहुत ज़्यादा महत्व देता है। अब तो हालत यह हो गई है कि बहुत सारे दुकानदार अपने यहां इस आशय की इबारत टांगने लगे हैं कि कृपया हमारी रेट्स की तुलना ई कॉमर्स साइट्स की रेट्स से न करें! वे तो लिख कर टांग देते हैं लेकिन मैं फिर भी पूछना चाहता हूं कि क्यों न करें? हम आपसे महंगा सामान क्यों खरीदें? आपके पास कोई शिकायत लेकर आएंगे तो आप तोता चश्म बन जाएंगे। रूखा जवाब देंगे। अगर लौटाना चाहेंगे तो खा जाने वाली नज़रों से देखेंगे, और बहुत मज़बूर हुए तो सुबह ग्यारह बजे आए ठााहक से कहेंगे कि सामान वापसी का समय शाम पांच बजे है। तब आएं। आपका प्रयास यही होता है कि जो भी भुगतना है ठााहक ही भुगते। आपको कोई कष्ट न हो।

आज खरीददार के पास विकल्पों की बहुतायत है। और विकल्पों की यह बहुलता केवल उत्पादों और ब्राण्ड्स के मामले में ही नहीं है। अब उसके पास यह विकल्प बाहुल्य भी है कि वह खरीददारी कहां से और कैसे करे। पहले जहां उसके पास केवल अपने मुहल्ले की दुकान से खरीददारी का विकल्प था, अब अगर वह चाहे तो दुकान को छोड़कर मॉल में जा सकता है और अगर कहीं न जाना चाहे तो किसी ई कॉमर्स साइट से घर बैठे भी अपनी इच्छित वस्तु पा सकता है।

इस बात पर भी विचार किया जाना चाहिए कि ई कॉमर्स साइट्स अन्यों की तुलना में सस्ता सामान कैसे दे पाती हैं! सबसे पहली बात तो यह कि इनके व्यवसाय का आकार बहुत बड़ा होता है। अपने बड़े आकार की वजह से ये निर्माता या सप्लायर से मोलभाव कर भारी डिस्काउण्ट प्राप्त कर लेतेहैं। दूसरी बात यह कि व्यापार के बड़े आकार की वजह से गोदाम, लॉजिस्टिक्स और ट्रांसपोर्ट पर प्रति यूनिट खर्चा कम आता है और तीसरी बात यह कि अपने बड़े आकार की वजह से इनमें से बहुतों ने अपना डिलीवरी नेटवर्क बना लिया है जो कम खर्च में इनके माल को ग्राहक तक पहुंचा पाता है। अब इनकी चालाकी या अक्लमंदी को भी समझिये। ये कंपनियां बहुत सारे उत्पादों पर जानबूझकर घाटा उठाती हैं। ऐसा ये ग्राहक को अपनी साइट पर आकर्षित करने और अपनी साइट को उसकी आदत में शामिल करने के लिए करती हैं। ऐसा करके ये छोटे प्रतिस्पर्धियों को स्पर्धा से बाहर भी करती रहती हैं। और भी जानिए। जो उत्पाद ज़्यादा बिकते हैं ये उनका उत्पादन ही ख़ुद करने लग जाती हैं, जो अन्य प्रचलित ब्राण्ड्स की तुलना में सस्ते होते हैं। ग्राहक चार चीज़ें इनकी बनाई खरीदता है तो तीन चीज़ें और भी खरीद लेता है। क्योंकि इनके व्यापार का आकार बड़ा होता है, ये ठााहक को अपनी तरफ खींचने के लिए डेटा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भी भरपूर प्रयोग करने की सामर्थ्य रखते हैं। आपने किसी साइट पर कुछ खोजा तो वे बार–बार उस तरह की चीज़ें आपको दिखा कर अंततः उसे खरीदने के लिए तैयार कर लेते हैं।

ईकॉमर्स साइट्स के सस्ता माल बेचने के पीछे बहुत बड़ी भूमिका वेंचर कैपिटलिस्ट्स (VC) की भी होती है। उनसे प्राप्त वित्तीय समर्थन के बल पर इस तरह की कंपनियां आठ दस साल तक भी घाटा उठाकर बिज़नेस करने की सामर्थ्य अर्जित कर लेती हैं। अब यही देखें कि फ्लिपकार्ट ने 2022–23 तक कभी प्रॉफिट दिखाया ही नहीं, फिर भी उसका वैल्यूएशन बीस मिलियन डॉलर से अधिक था। अमेज़ॉन इण्डिया (2024 के आंकड़ों के अनुसार) प्रॉफिट में नहीं है फिर भी 5–6 हज़ार करोड़ का निवेश कर रही है। ये मात्र दो उदाहरण हैं। ये बड़े व्यापारी वेंचर कैपिटल से मार्केट पर कब्ज़ा करने की जुगत में रहते हैं। प्रतिस्पर्धी ख़त्म हो जाए, फिर तो ये जैसे चाहे वैसे व्यवसाय करेंगे। हमने अपने देश में हाल के बरसों में अनेक ब्राण्ड्स को लुप्त होते देखा है। इसके पीछे यही खेल चलता है। यह देखिये कि जैसे–जैसे प्रतिस्पर्धी कमज़ोर या विलुप्त होता है ये अपनी कीमतें बढ़ाने लग जाते हैं। अमेज़ॉन प्राइम इसका एक उदाहरण है। अब उसने प्राइम की सदस्यता महंगी कर दी है, लौटाने या बदलवाने की सुविधाएं कम कर दी हैं, उत्पादों की कीमतें भी पहले जितनी आकर्षक नहीं रह गई हैं। एक और उदाहरण देखें। पहले जब उबर और ओला बाज़ार में आए थे तो उन्होंने ड्राइवरों को इन्सेण्टिव दिये, हम उपभोक्ताओं को भी तरह–तरह के लालच दिए। अब जब बाज़ार से इनके प्रतिस्पर्धी कम या लुप्त हुए तो ये सारी चीज़ें भी ख़त्म हो गईं। टेलीकॉम के बाज़ार में हमारे देखते–देखते कितनी कम्पनियां विलुप्त हो चुकी हैं और जो बची हैं वे अत्यधिक निर्ममता से अपने ग्राहकों का दोहन कर रही हैं।

यह सब लिखने का एकमात्र आशय यह है कि हमारे पारंपरिक दुकानदार इस खेल और इसके पीछे छिपे ख़तरों को समझें। यह समझें कि बड़ी ताकतें उनका सर्वनाश करने पर उतारू हैं। अगर वे अपने अस्तित्व को बचाए रखना चाहते हैं तो उन्हें ग्राहक को बेहतर सेवाएं देनी होंगी। ग्राहक की परवाह करनी होंगी। ग्राहक को अपनी तरफ खींचने और अपना बनाए रखने का हर मुमकिन प्रयास करना होगा। तभी उनके बचे रहने की कोई सम्भावना बनेगी। भारत का खरीददार और बाज़ार दोनों ही विविधता पूर्ण हैं। हमारा सोच अभी भी पारंपरिक है। एक ग्राहक के रूप में हमें दुकानदार की आत्मीयता और व्यक्तिगत स्पर्श अभी भी आकर्षित करते हैं। अगर वह दो बोल मीठे बोल ले और हमारा हाल चाल पूछ ले, अगर वह अपने साफ सुथरे और ईमानदार व्यापार के बारे में हमारे मन में अपना विश्वास स्थापित कर ले तो हम किसीमॉल या ई कॉमर्स साइट की बजाय उसी के पास जाना पसंद करेंगे। लेकिन अगर वह यह सोचे कि उसे नहीं ग्राहक को ही उसकी ज़रूरत है तो फिर उसे नष्ट होने से कोई नहीं बचा सकता है। दीवार पर जो साफ–साफ लिखा है उसे पढ़ना और उसके अनुरूप आचरण करना अथवा अपना विदा गीत लिखना – चयन उसका है!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

आयुर्वेद व हर्बल उत्पाद को मिल रहे नए आयाम पेटेंट दिशा-निर्देश

आयुर्वेद आहार व मानक से इनोवेशन व मार्केटिंग का ग्राफ बढ़ेगा

विकास आसावत

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः यानि सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त रहें। भारत पारंपरिक औषधीय जैव–संसाधनों से समृद्ध देश है और सदियों पुराने पारंपरिक ज्ञान का जनक व निर्वाहक है। भारतवर्ष विशेषकर हिमालय श्रृंखला औषधीय गुण युक्त हर्बल पौधों का खजाना है जिसे ग्रीन गोल्ड भी कहते है। आयुष स्वास्थ्य सेवा और उपचार की सुस्थापित प्रणालियो में आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी, होम्योपैथी, योग, प्राकृतिक चिकित्सा आदि शामिल हैं। देश–विदेश में आधुनिक व नवीनतम शोध के चलते नित नए आयुष उत्पाद/प्रक्रियाओं/फ़ॉर्मूलेशन का विकास हो रहा। हाल ही में 23 सितम्बर को दसवे राष्ट्रीय आयुर्वेदिक दिवस पर पेटेंट ऑफिस ने आयुष मंत्रालय के सहयोग से आयुष संबंधी आविष्कारों के परीक्षण के दिशानिर्देश जारी किए है। इन दिशानिर्देशों का उद्देश्य भारतीय चिकित्सा की पारंपरिक प्रणाली के लिए पेटेंट के आवेदन, परीक्षण व स्वीकृति को स्पष्ट कर अधिक सुलभ व सुव्यवस्तिथ बनाना है।

दिशानिर्देश में आयुष उत्पाद के साथ साथ उपकरण, डिवाइस, व आयुष प्रणाली पर आधारित पौष्टिक–औषध (न्यूट्रास्युटिकल)/ फ़ूड रेसिपीज़ के मूल्य संवर्धित उत्पाद को आयुष सम्बंधित अविष्कार माना गया है। हर्बल इन्सेंस, हर्बल साबुन, हर्बल सेनेटरी पैड्स से लेकर प्रकृति व विकृति के आकलन के लिए स्मार्ट वेअरबल डिवाइस, एंटीमाइक्रोबियल पोलीहर्बल कम्पोजीशन आदि स्वीकृत पेटेंट के वास्तविक उदाहरणों को आवेदक के रिफरेन्स के लिए गाइडलाइन्स में सम्मिलित किया है।

पदार्थ के यील्ड व शुद्धता उल्लेखनीय ढंग से ज्यादा प्राप्त होने पर, सिनर्जिस्टिक इफ़ेक्ट प्रदर्शित करने पर, आयुष डिवाइस व उपकरण के सन्दर्भ में नवीनता व तकनीकी प्रभाव स्थापित करने पर पेटेंट स्वीकृत हो जायेगा।

गाइडलाइन्स में ट्रेडिशनल नॉलेज डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) में नवीनता सम्बन्धी जांच को महत्वपूर्ण माना गया है। टीकेडीएल 4.54 लाख भारतीय पारंपरिक औषधीय ज्ञान सम्बंधित फ़ॉर्मूलेशन्स व पद्धतिया का डिजिटल डेटाबेस है जो हमारे इस ज्ञान को सरंक्षित कर अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट कार्यालयों में इसके दुरुपयोग को रोकता है। संस्कृत, हिंदी, तमिल, मलयालम, अरबी, फ़ारसी, उर्दू, भोटी आदि स्थानीय भाषाओं में मौजूद प्राचीन ठांथों की जानकारी को पाँच अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं, अर्थात् अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश और जापानी में लिपिबद्ध किया गया है। वर्ष 1995 में हल्दी के घाव भरने के गुणों को अमेरिकी पेटेंट मिलने पर और बाद में यूएस पेटेंट कार्यालय में उसी पेटेंट को रद्द करने में लगे समय, प्रयास और धनराशि के कारण पारम्परिक ज्ञान के संरक्षण के टीकेडीएल की नीव रखी गयी। डेटाबेस वर्तमान में विश्वभर में भारत, यूरोप, अमेरिका, जापान सहित 17 पेटेंट कार्यालयों को उपलब्ध है व इनके लिपिबद्ध होने से अन्य देशो के पेटेंट एग्जामिनर भी पेटेंट जारी करने से पहले ये सुनिश्चित कर सकते है कि क्लेम किया गया प्रोसेस या फार्मूलेशन पहले से ही भारतीय ज्ञान के रूप सूचित है या नया अविष्कार है।

सामानांतर प्रगति में भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफ.एस.एस.ए.आई) ने आयुष मंत्रालय के परामर्श से 'आयुर्वेद आहार' श्रेणी के अंतर्गत प्रामाणिक आयुर्वेदिक ठांथों, अवयवों और प्रक्रियाओं पर आधारित व्यंजनों/ खाद्य पदार्थों की एक निश्चित सूची जारी की है जो भारत के पुरातन खाद्य ज्ञान को मुख्यधारा में लाता है। आयुर्वेद आहार को मौसम, शरीर की पाचन क्षमता और प्रतिरोधक क्षमता के मद्देनजर तैयार किया जाता है। इसी वर्ष जुलाई में एफ.एस.एस.ए.आई द्वारा जारी सूची में तिल मोदक, क्षीरपाक, गुलकंद, खिचड़ी समेत कुल 91 आयुर्वेद आहार शामिल किये गए है। 'आयुर्वेद आहार' का कांसेप्ट खाद्य व्यवसाय संचालकों स्पष्टता प्रदान कर एक नया विश्वसनीय उपभोक्ता मार्किट तैयार करता है।

मानक की बात करे तो आयुष मंत्रालय ने भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) के सहयोग से आयुर्वेद और योग के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (आईएसओ) तकनीकी समिति की स्थापना की है जिसके फलस्वरूप आईएसओ/टीसी 249/एससी 2 का गठन हुआ है। वही नई उपसमिति (एससी 2) का सचिवालय बीआईएस (इंडिया) को सौंपा गया है। लोकसभा में दी गयी जानकारी के अनुसार अबीआईएस ने आयुष के विभिन्न पहलुओं पर 169 मानक विकसित किए हैं।

भारत देश आयुर्वेद का जनक के साथ साथ इसका सबसे बड़ा बाजार भी है। परंपरागत औषधिया व संबंधित फ़ॉर्मूलेशन्स पर बढ़ते भरोसे, अनुसन्धान को बढ़ावा देना, पेटेंट सिस्टम को अधिक सुगम बनाना, मानकीकरण, 'आयुर्वेद आहार' जैसी पहल निश्चित ही आयुष क्षेत्र की वृद्धि के कारक हैं। वही अपने गठन के ग्यारह वर्ष पूर्ण करने के नजदीक आयुष मंत्रालय यह भी सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि आयुष प्रणालियां वैश्विक स्वास्थ्य सेवा समाधानों के एक अभिन्न अंग के रूप में विकसित होती रहें। टीकेडीएल और वैज्ञानिक साक्ष्यों का सहेजकर रखा गया ज्ञान भारतीय चिकित्सा पद्धित सरक्षित कर विदेशो में अनधिकृत पेटेंट स्वीकृतियों को रोकने में सहायक होगा।

–विकास आसावत,
पेटेंट अटॉर्नी एवं एडवोकेट

भगत सिंह का...भगत सिंह होने का मतलब!

राम निवास बैरवा

08 सितम्बर, 2025 को अपेक्षाकृत शांत देश नेपाल में युवाओं और छात्रों का आंदोलन होकर संसद, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति भवन और प्रधानमंत्री आवासों को आग के हवाले कर दिया। प्रधानमंत्री त्यागपत्र देकर नेपाल से बाहर चले गये। यह राजनेताओं की पद लोलुपता भ्रष्टाचार, महंगाई के विरूद्ध मिली जुली स्वतःस्फूर्त प्रतिक्रिया थी, जो 'सोशल मीडिया' पर "जेन–जेड" (जनरेशन जेड) के नाम से व्यापक रूप से सक्रिय हुआ। सरकार ने एक को छोड़कर सभी सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगा दिया जिससे उनका संचार माध्यम अवरूद्ध हो गया और वे सरकार के खिलाफ उबल पड़े। भारतीय उपमहाद्वीप में पहले श्रीलंका और बाद में बांग्लादेश में युवाओं ने तथा कथित चुनी हुई सरकारों को बेदखल होने के लिए बाध्य किया।

राजनीतिक रूप से इन सभी देशों में युवाओं और छात्रों के आंदोलन स्वतः स्फुर्त रूप से ही हुए हैं। लोकतन्त्रों में ऐसे आंदोलन साबित करते हैं कि तथाकथित लोकतंत्र वास्तव में लोकतंत्र नहीं हैं बल्कि बारी–बारी से सत्ता पर अधिकार के लिए वर्ग विशेष चुनावों का सहारा लेते हैं जिनका परिणाम पहले से ही तय होता है। युवाओं के आंदोलनों में विचारधारा और सिद्धांतों का भटकाव देखा गया है। भारत में 1974 के कथित आंदोलन को 'सम्पूर्ण क्रांति' का ठप्पा लगा कर उसी पुरानी पूंजीवादी विचारधारा के दलदल में डाल दिया गया।

फिर भी, आज तक युवाओं और छात्रों के प्रेरणास्त्रोत भगत सिंह ही रहे हैं, बेशक उन्हें भगत सिंह का भगत सिंह होने के आधारों का ज्ञान नहीं हो। दरअसल भगत सिंह केवल शहीद ही नहीं है बल्कि 'क्रान्ति' के प्रतीक है। यह बात स्वयं भगत सिंह ने 22 मार्च, 1931 –फांसी दिये जाने के एक दिन पहले अपने मित्रों के नाम लिखे पत्र लिखी थी कि – "मेरा नाम हिंदुस्तानी क्रांति का प्रतीक बन चुका है और क्रान्तिकारी दल के आदर्शों और कुर्बानियों ने मुझे बहुत ऊंचा उठा दिया है – इतना ऊंचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊंचा मैं जीवित हर्गिज नहीं हो सकता।" भगत सिंह का क्रान्ति का प्रतीक होना ही वह तथ्य है जो भगत सिंह को भगत सिंह बना चुका है, युवाओं का प्रेरणास्त्रोत बना चुका है– जिसके पीछे कथित राजनीतिक पार्टियां और उनके पीढ़ियों से जमें बैठे राजनेता घिसटते जाते हैं, क्योंकि उनका सिर्फ वोट लेकर चुनाव जीतना ही एक मात्र स्रिद्धांत है, एक मात्र विचारधारा जो है।

भगत सिंह, ... भगत सिंह क्यों है?

8 जून, 1929 को केंद्रीय असेंबली में भगतसिंह और उनके साथियों ने बंब फेंका था और जो पर्चे फेंके गये थे उनमें अन्य बातों के यह भी लिखा था "हम मनुष्य के जीवन को पवित्र समझते हैं। हम ऐसे उज्जवल भविष्य में विश्वास रखते हैं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण शान्ति और स्वतंत्रता के अवसर मिल सके। हम इंसान का खून बहाने की अपनी विवशता पर दुखी हैं परन्तु क्रान्ति द्वारा सबको समान स्वतंत्रता देने और मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को समाप्त कर देने के लिए क्रान्ति में कुछ–न–कुछ रक्त पात अनिवार्य हैं।"

इसी कड़ी में भगतसिंह द्वारा सिद्धांत पोषित "हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक संघ (सेना)" का स्पष्ट राजनीतिक उद्देश्य था कि समाजवादी व्यवस्था लागू करके मजदूर वर्ग की तानाशाही तंत्र स्थापित करना था। समाजवाद और कम्युनिस्म ब्रिटिश सरकार को कभी भी स्वीकार्य नहीं हो रहा था, वह कांग्रेस को भी कभी स्वीकार्य नहीं हो रहा था, लेकिन अधिकांश जनता को मजदूर किसानों को अपनी मुक्ति का मार्ग इन्हीं क्रान्तिकारियों में दिखाई दिया था, अतः हिन्दुस्तान की जनता ने भगतसिंह के सिद्धांतों को समर्थन देने के लिए 30 जून, 1929 को 'भगतसिंह दिवस' मनाया गया। वे राजनीतिक व्यक्ति थे, वे राजनैतिक कैदी थे, वे क्रोन्तिकारी थे। वे अपराधी नहीं थे। 30 जून, 1929 के 'भगतसिंह दिवस' ने यह साबित कर दिया था– भारत की राजनीतिक और राजनैतिक इतिहास में, जीवित रहते जिस व्यक्ति के सम्मान में जो भावनायें जनता ने अभिव्यक्त की वह सौभाग्य तो खुद गांधीजी को नहीं मिला।

उसके बाद, जब दण्ड प्रक्रिया संहिता 1898 में धारा 540 बी जोड़ने के बिलों को, जिसके अनुसार भगतसिंह आदि पर दिये जाने वाले फैसले की कहीं भी अपील नहीं की जा सकती थी, केंद्रीय असेंबली ने पारित नहीं किया, तब वायसराय ने अध्यादेश जारी करके विशेष ट्रिब्यूनल गठित की। उक्त ट्रिब्यूनल को छः महिनों में ही फैसला देना था, क्योंकि छः महिने बाद असेंबली उसे कानून नहीं बनने देती और भगतसिंह आदि पर मुकदमा चला कर फांसी देना मुश्किल हो जाता।

उस ट्रिब्यूनल के एक जज जी.सी. हिल्टन ने भगतसिंह आदि को हथकड़ियों के साथ अदालत में पेश करने को कहा था, तब भगतसिंह ने ट्रिब्यूनल का बहिष्कार कर दिया, तब उन्हें लाठियों से पिटवाया गया और भारतीयों को गालियां दी गई तब भगतसिंह ने एक भारतीय जज जस्टिस आगा हैदर को संबोधित करते हुए कहा था, "ऐसी मानसिक स्थिति वाले जज कैसे न्याय करेंगे।" इस पर आगा हैदर ने उस दिन की अदालती कार्यवाही पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया था। उस बात की चर्चा पूरी दुनिया में हुई और उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप एक बार फिर से 'भगतसिंह दिवस' मनाया गया था।

भगतसिंह का भगतसिंह होने का मतलब यही है।

07 अक्टूबर, 1930 तक अदालती ट्रिब्यूनल ने 300 पृष्ठों का अपना फैसला दे दिया और 07 अक्टूबर, 1930 को ही भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव को 17 अक्टूबर, 1930 को फांसी देने का वारंट भी निकाल दिया था। लेकिन उस दिन फांसी नहीं दी जा सकी।

तब, भगतसिंह को फांसी नहीं दिये जाने के प्रयास शुरू किये गये। इन प्रयासों का सबसे अधिक ह्रदय विदारक वह प्रयास था जो उनके कमांडर और मुखिया चंद्रशेखर आजाद ने किया था– वही चंद्रशेखर जो आजाद था, आजाद रहा..... और... 27 फरवरी, 1931 को इलाहबाद के अल्फ्रेड पार्क में अपनी घेराबंदी को देख स्वयं की पिस्तौल से अपनी कनपटी पर गोली मारकर हमेशा के लिए आजाद हो गया था।

उसी 27 फरवरी, 1931 के एक दिन पहले 26 फरवरी, 1931 की रात ग्यारह बजे के करीब गाजियाबाद के एक कांग्रेसी नेता रघुनंदन शरण के साथ दुर्गा भाभी और सुशीला जी, चंद्रशेखर का एक खास संदेश लेकर दरियागंज में अवस्थित डॉ. एम.ए. अंसारी के मकान पर गांधीजी से मिलने पहुंचे। चंद्रशेखर आजाद का संदेश था कि अगर गांधीजी भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव की फांसी की सजा को बदलवा सकें तो चंद्रशेखर जी अपने सभी साथियों के साथ गांधीजी के सामने आत्मसमर्पण कर देंगे। लेकिन गांधीजी ने कहा कि "वे व्यक्तिगत रूप से भगतसिंह को चाहते हैं परन्तु वे उनके तरीके से सहमत नहीं हैं।" दुर्गा भाभी को वह जवाब अच्छा नहीं लगा और वे नमस्कार करके वापस आ गयी।

सच, भगतसिंह का भगतसिंह होने का मतलब यही है कि उनके लिए हमेशा आजाद रहने वाला चंद्रशेखर भी आत्मसमर्पण करने को तैयार हो गये थे। वह भी उस व्यक्ति के सामने जो तब तक आत्म–विभोर राजनीति का प्रतीक बन चुके थे।

भगतसिंह का भगतसिंह होने का मतलब सिर्फ व्यक्ति ही नहीं बल्कि एक विचारधारा है, एक सिद्धांत है जिसकी भारत ही के नहीं, पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के युवाओं को ऐसे राज्य व्यवस्था की तरफ ले जाना था जो 'वसुधैव कुटुम्बकम' की महत्ता के अनुरूप 'विश्व बंधुत्व' की ओर पूरी मानवता को ले जाये, जिसका अर्थ समस्त संसार में समानता (साम्यवाद Worldwide Equality in the true sense1/2) के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझता। (भगतसिंह के पंजाबी भाषा और लिपि की समस्या नामक लेख से जैसे लिखा है।)

– राम निवास बैरवा,
पूर्व क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त

एनसीसी दिवस पर कैडेट्स ने विद्यालय में स्वच्छता अभियान चलाया

ब्यावर, (निसं)। सनातन धर्म राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, देलवाड़ा रोड में एनसीसी दिवस मनाया। इस विशेष अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य गुरुशरण गोयल तथा एनसीसी प्रभारी (फर्स्ट ऑफिसर) ओमप्रकाश कुमावत ने केक काटकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस दौरान एनसीसी कैडेट्स ने तालियों और देशभक्ति के नारों से माहौल को उत्साहपूर्ण बना दिया।

कार्यक्रम के शुभारंभ के बाद एनसीसी कैडेट्स ने विद्यालय परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया और स्वच्छता का संदेश दिया। इसके पश्चात सभी कैडेट्स ने सामूहिक रूप से वृक्षारोपण किया, जिसमें पर्यावरण संरक्षण और जिम्मेदार नागरिकता की भावना प्रदर्शित हुई। इस कार्यक्रम में विद्यालय के 46 एनसीसी कैडेट्स उपस्थित रहे। एनसीसी गतिविधियों में प्रिंस, अतुल और निशा, रोशनी ने नेतृत्व करते हुए सक्रिय भूमिका निभाई। कार्यक्रम का संचालन अतुल शर्मा द्वारा किया गया।

■ **कैडेट्स ने सामूहिक रूप से वृक्षारोपण किया, जिसमें पर्यावरण संरक्षण और जिम्मेदार नागरिकता की भावना प्रदर्शित हुई**

कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के प्रधानाचार्य गुरुशरण गोयल ने एनसीसी कैडेट्स को संबोधित करते हुए कहा कि एनसीसी केवल परेड या यूनिफॉर्म नहीं, बल्कि यह अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास और राष्ट्रभक्ति की मजबूत नींव है। उन्होंने एनसीसी दिवस के इतिहास और इसका छात्र जीवन व भविष्य में महत्व विस्तारपूर्वक समझाया। इसी क्रम में एनसीसी प्रभारी एवं फर्स्ट ऑफिसर ओमप्रकाश कुमावत ने भी कैडेट्स को संबोधित करते हुए कहा कि एनसीसी वह शक्ति है जो छात्रों को शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से सक्षम बनाती है। यह संस्था युवाओं में कर्तव्य, नेतृत्व और समाज सेवा की भावना को विकसित करती है। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रविंद्र मेड़तवाल ने एनसीसी कैडेट्स की प्रशंसा करते हुए कहा कि एनसीसी प्रशिक्षण जीवनभर काम आने वाला अनुभव है। यह युवा पीढ़ी को राष्ट्र सेवा के लिए सदैव तैयार रहने की प्रेरणा देता है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 24 नवम्बर, 2025

मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 9:54 तक, शूल योग दिन 12:37 तक, वणिज करण प्रातः 8:24 तक, चन्द्रमा रात्रि 4:27 से मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–वृश्चिक, चन्द्रमा–धनु, मंगल–वृश्चिक, बुध–तुला, गुरू–कर्क, शुक्र–तुला, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज रवियोग रात्रि 9:54 तक है। भद्रा प्रातः 8:24 से रात्रि 9:53 तक है। आज विनायक चतुरथी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:16 तक, शुभ 9:35 से 10:54 तक, शुभ 1:32 से 2:51 तक, लाभ–अमृत 2:51 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:57, सूर्यास्त 5:30 तक

मेष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। मित्रों/रिश्तेदारों से आपसी अनबन हो सकती है। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मिथुन
व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजना बनेगी।

कर्क
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

सिंह
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा।

कन्या
घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा, उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।